Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

स्वतंत्र भारत में राजनीति

अध्याय - 4

भारत के विदेश संबंध

भाग - 6

Satyaveer Yadav

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

1. इन बयानों के आगे सही या गलत का निशान लगाएँ:

(क) गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाने के कारण भारत, सोवियत संघ अमरीका, दोनों की सहायता हासिल कर सका।

(ख) अपने पड़ौसी देशों के साथ भारत के संबंध शुरूआत से ही तनावपूर्ण रहे।

(ग) शीतयुद्ध का असर भारत-पाक संबंधों पर भी पड़ा।

(घ) 1971 को शांति और मैत्री की संधि संयुक्त राज्य अमरीका से भारत की निकटता का परिणाम भी

NAM

USSR

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर – (क) सही (ख) सही

(ग) सही (घ) गलत

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

2. निम्नलिखित का सही जोड़ा मिलाएँ :

(क)	1950-64 के दौरान भारत की विदेश नीति का लक्ष्य	(i)	तिब्बत के धार्मिक नेता जो सीमा पार करके भारत चले गये।
(ख)	पंचशील	(ii)	क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता की रक्षा तथा आर्थिक विकास
(ग)	बांडुंग सम्मेलन	(iii)	शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के पांच सिद्धांत।
(घ)	दलाई लामा	(iv)	इसकी परिणति गुटनिरपेक्ष आंदोलन में हुई।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : (क) → (ii), (ख) → (iii), (ग) → (iv), (घ) → (i)

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

3. नेहरू विदेश नीति के संचालन को स्वतंत्रता का एक अनिवार्य संकेतक क्यों मानते थे? अपने उत्तर में दो कारण बताएँ और उनके पक्ष में उदाहरण भी दें।

उत्तर : एक संप्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्र की ही एक मजबूत विदेश नीति हो सकती है, एक स्वतंत्र राष्ट्र ही अपनी आकांक्षा के अनुरूप विदेश नीति का संचालन कर सकता है।

एक स्वतंत्र राष्ट्र ही अपनी घरेलू परिस्थितियों एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य को मध्यनजर रखते हुए सुदृढ़ विदेश नीति का पालन कर सकता है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- जो राष्ट्र संप्रभु नहीं होते उनकी विदेश नीति पर अन्य ताकतों का प्रभाव देखा जा सकता था।
- शीत युद्ध के दौर में जो विकासशील राष्ट्र ताकतवर देशों की सहायता पर निर्भर थे। उन्हें अपनी विदेश नीति महाशक्तियों के अनुरूप बनानी पड़ी।

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

4. "विदेश नीति का निर्धारण घरेलू जरूरत और अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के दोहरे दबाव में होता है।" 1960 के दशक में भारत द्वारा अपनायी गयी विदेश नीति से एक उदाहरण देते हुए अपने उत्तर की पुष्टि करें।

उत्तर :

विदेश नीति को निर्धारित करने वाली घरेलू परिस्थितियां :-

- राष्ट्रीय हित
- देश की जनसंख्या एवं विचारधारा
- आर्थिक परिस्थितियां

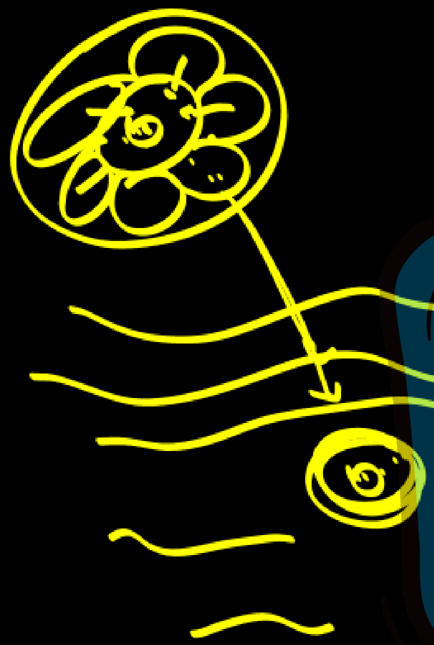

- कृषि व उद्योग की स्थिति
- विज्ञान व तकनीकि विकास
- भौगोलिक व सामरिक स्थिति

विदेश नीति को प्रभावित करने वाली अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियां :-

- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का तनाव
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के महत्वपूर्ण मुद्दे
- विचारधारा का प्रभुत्व
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गुटबाजी आदि

Under CSR Support by ipca Foundation
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- 1960 के दशक में भारत को युद्धों का भी सामना करना पड़ा।
- इसी दशक में भारत में अकाल की स्थिति ने चुनौती उत्पन्न की।

विदेश नीति पर प्रभाव :-

- गुटनिरपेक्षता की नीति
- बांग्लादेश युद्ध के समय सोवियत संघ से सहायता।
- खाद्यान्न संकट के समय अमरीका से सहायता।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

5. अगर आपको भारत की विदेश नीति के बारे में फैसला लेने को कहा जाये तो आप इसकी किन दो बातों को बदलना चाहेंगे। ठीक इसी तरह यह भी बताएँ कि भारत की विदेश नीति के किन दो पहलुओं को आप बरकरार रखना चाहेंगे। अपने उत्तर के समर्थन में तर्क दीजिए।

उत्तर : विदेश नीति के बारे में दो बातें जो बदलना चाहेंगे–

1. भारत की शांतिप्रियता एवं सह–अस्तित्व की नीति 1962–1972 के बीच तीन युद्धों में कुछ विशेष काम नहीं आयी। इसलिए शांतिप्रियता के साथ साथ भारत को एक ताकतवर राष्ट्र की तस्वीर भी अपनी विदेश नीति के जरिए बनानी होगी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

2. सार्क जैसे संगठनों के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग की नीति पाकिस्तान व चीन के साथ मतभेदों के कारण अधिक सफल नहीं हो पायी।

विदेश नीति के दो पहलू जिन्हें हम बराकरार रखना चाहेंगे –

1. गुटनिरपेक्षता की नीति
2. पंचशील के सिद्धांत। क्योंकि ये हमेशा प्रासंगिक है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

6. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(क) भारत की परमाणु नीति

(ख) विदेश नीति के मामलों पर सर्व-सहमति

उत्तर :

(क) भारत की परमाणु नीति :

- तेज गति से आधुनिक भारत के निर्माण के लिए नेहरू ने हमेशा विज्ञान प्रौद्योगिकी पर अपना विश्वास जताया था।
- नेहरू की औद्योगीकरण की नीति का एक महत्वपूर्ण घटक परमाणु कार्यक्रम था।

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- भारत शांतिपूर्ण उद्देश्यों में इस्तेमाल के लिए अणु ऊर्जा बनाना चाहता था।
- भारत ने मई 1974 में परमाणु परीक्षण किया।
- भारत ने इस परीक्षण को शांतिपूर्ण परीक्षण करार दिया।

(ख) विदेश नीति के मामलों पर सर्व-सहमति -

- विदेश नीति के कुछ मामलों पर सभी नेताओं एवं दलों में सर्व सहमति थी। जैसे -
- भारत अन्य सभी देशों की संप्रभुता का सम्मान करेगा।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- भारत की विदेश नीति का लक्ष्य शांति कायम करके अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करना है।
- किंतु गुटनिरपेक्षता की नीति पर सभी नेताओं की सर्व सहमति नहीं थी, कुछ पार्टियों का मानना था कि भारत को अमरीकी खेमे से नजदीकी बढ़ानी चाहिए क्योंकि इस खेमे की प्रतिष्ठा लोकतंत्र के हिमायती के रूप में थी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

7. भारत की विदेश नीति का निर्माण शांति और सहयोग के सिद्धांतों को आधार मानकर हुआ। लेकिन, 1962-1971 की अवधि यानी महज दस सालों में भारत को तीन युद्धों का सामना करना पड़ा। क्या आपको लगता है कि यह भारत की विदेश नीति की असफलता है अथवा, आप इसे अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का परिणाम मानेंगे? अपने वक्तव्य के पक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर :

- आजादी के समय भारत की विदेश नीति शांति व सहयोगी की।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- चीन के साथ पंचशील समझौता।
- पाकिस्तान के साथ भी सहयोग व समझौते।
- किन्तु 1962 का चीन के साथ युद्ध भारत की विदेश नीति की असफलता।
- भारत की विदेश नीति अव्यावहारिक साबित हुई।
- चीन पर जरूरत से ज्यादा विश्वास भारत की विदेश नीति की विफलता का कारण।
- 1962 से 1972 तक के तीन युद्धों में कुछ अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियां भी जिम्मेदार।

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

8. क्या भारत की विदेश नीति से यह झलकता है कि भारत क्षेत्रीय स्तर की महाशक्ति बनना चाहता है? 1971 के बांग्लादेश युद्ध के संदर्भ में इस प्रश्न पर विचार करें।

उत्तर :

- भारत शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व व सहयोग की विदेश नीति लेकर चलता है।
- भारत का नजरिया अपने छोटे पड़ौसी देशों के साथ सदैव सहयोग कर रहा है ना कि उन पर दादागिरी का।
- 1971 के बांग्लादेश युद्ध में पहले पाकिस्तान द्वारा आक्रमण करने पर ही भारत ने युद्ध का मोर्चा संभाला।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- भारत पर बढ़ रहे निरंतर शरणार्थियों के भारत की समस्या भी एक कारण थी।
- भारत दक्षिणी एशिया का एक विशाल राष्ट्र है किंतु इसकी विदेश नीति सदैव दूसरे देशों की संप्रभुता का सम्मान करने वाली रही है।

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan

9\. किसी राष्ट्र की राजनीतिक नेतृत्व किस तरह उस राष्ट्र की विदेश नीति पर असर डालता है? भारत की विदेश नीति के उदाहरण देते हुए इस प्रश्न पर विचार कीजिए।

उत्तर : विदेश नीति के निर्माण में उस देश के राजनीतिक नेतृत्व का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।

उदाहरण :–

पं. जवाहर लाल नेहरू से भारत की विदेश नीति पर्याप्त रूप से प्रभावित हुई।

जैसे - चीन के मामले में पटेल को आशंका थी कि चीन कभी भी पलट सकता है पर नेहरू ने ये बात नहीं मानीं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ पार्टियों का मानना था कि भारत अमेरिका के साथ नजदीकियां बढ़ायें किंतु नेहरू ने गुटनिरपेक्षता को अपनाया।
- लाल बहादुर शास्त्री एवं इंदिरा गांधी के समय व्यावहाारिक विदेश नीति दृष्टिगोचर होती है जो कुछ हद तक नेताओं के नेतृत्व का परिणाम थी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

10. निम्नलिखित अवतरण को पढ़ें और इसके आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

गुटनिरपेक्षता का व्यापक अर्थ है अपने को किसी भी सैन्य गुट में शामिल नहीं करना ... इसका अर्थ होता है चीजों को यथासंभव सैन्य दृष्टिकोण से न देखना और इसकी कभी जरूरत आन पड़े तब भी किसी सैन्य गुट के नजरिए को अपनाने की जगह स्वतंत्र रूप से स्थिति पर विचार करना तथा सभी देशों के साथ दोस्ताना रिश्ते कायम करना.....

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

(क) नेहरू सैन्य गुटों से दूरी क्यों बनाना चाहते थे?

(ख) क्या आप मानते हैं कि भारत सोवियत मैत्री की संधि से गुटनिरपेक्षता के सिद्धांतों का उल्लंघन हुआ? अपने उत्तर के समर्थन में तर्क दीजिए।

(ग) अगर सैन्य गुट न होते तो क्या गुटनिरपेक्षता की नीति बेमानी होती?

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर :

(क) किसी एक सैन्य गुट में शामिल होकर भारत स्वतंत्र विदेश नीति का निर्माण नहीं कर पाता।

सैन्य गुट युद्धों को भी बढ़ावा देते हैं।

(ख) भारत सोवियत मैत्री की संधि से गुटनिरपेक्षता का उल्लंघन नहीं हुआ, क्योंकि संधि के पश्चात भी भारत गुट निरपेक्षता के मौलिक सिद्धांतों पर कायम रहा। जब सोवियत संघ की सेनाएं अफगानिस्तान में पहुंची, तो भारत ने उसकी आलोचना की।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

NAM 2.0

(ग) यदि विश्व में सैन्य गुट नहीं होते तो भी गुट निरपेक्षता की प्रांसगिकता बनी रहती, क्योंकि गुटनिरपेक्ष आंदोलन की स्थापना शांति व विकास के लिए की गई थी। आज विश्व में कोई शीतयुद्ध नहीं है पर गुटनिरपेक्ष आंदोलन की प्रांसगिकता आज भी बनी हुई है।